International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8:31
IJAHSS 2025; 7(2): 385-388
www.socialstudiesjournal.com
Received: 10-07-2025
Accepted: 15-08-2025

डॉ. रंजु कुमारी
पीएच. डी., इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजु कुमारी
पीएच. डी., इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

आजादी के पश्चात बिहार में महिला शिक्षा का विकास

डॉ. रंजु कुमारी

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2025.v7.i2e.327

सारांश

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया। विशेषकर महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई, जिससे समाज में महिला सशक्तिकरण की चेतना का उदय हुआ। किंतु आजादी से पहले बिहार ही नहीं बल्कि पूरे भारत में महिला शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। सामाजिक बंधन, पितृसत्तात्मक परंपराएँ और रूढ़िवादी सोच महिलाओं की शिक्षा के मार्ग में बाधा बनी हुई थीं। स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार और बिहार सरकार ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक कदम उठाए, जिसके परिणामस्वरूप धीरे.धीरे महिला शिक्षा में सुधार हुआ। आज बिहार में महिला शिक्षा का परिदृश्य स्वतंत्रता.पूर्व की तुलना में बहुत बदल चुका है, यद्यपि अब भी अनेक चुनौतियाँ शेष हैं।

1950 के दशक से बिहार में महिला शिक्षा के लिए विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की गई। संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किए जाने से बालिकाओं के लिए अवसर बढ़े। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा ष्सर्वशिक्षा अभियान", ष्राष्ट्रीय साक्षरता मिशनष् और ष्बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाष् जैसे कार्यक्रमों ने व्यापक असर डाला। विशेषकर 1990 के बाद से बिहार में महिला साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। 1951 में बिहार की महिला साक्षरता दर मात्र 4.22% थी, जो 2011 की जनगणना तक बढ़कर लगभग 51.5% तक पहुँच गई।

महिला शिक्षा के विकास में स्वयं सहायता समूहों, गैर सरकारी संगठनों और पंचायती राज संस्थाओं ने भी सहयोग किया। ग्रामीण क्षेत्रों में ष्मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजनाष् जैसी पहल ने लड़कियों की विद्यालय तक पहुँच को आसान बनाया। उच्च शिक्षा में भी महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ी है, जिससे वे चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रशासन और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में अग्रसर हुई हैं।

हालाँकि चुनौतियाँ आज भी मौजूद हैं. गरीबी, बाल विवाह, सामाजिक असमानता और बुनियादी ढाँचे की कमी अब भी महिला शिक्षा की गति को धीमा करते हैं। फिर भी, आजादी के पश्चात बिहार में महिला शिक्षा का विकास एक सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा है। यह स्पष्ट है कि निरंतर सरकारी प्रयास, सामाजिक जागरूकता और महिलाओं की इच्छाशक्ति ने शिक्षा को उनके जीवन का आधार बनाया है।

कूटशब्दः सामाजिक कुरीतियाँ, रूढ़िवादी सोच, आर्थिक अभाव, निशुल्क शिक्षा,साइकिल योजना।

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधारों की शुरुआत हुई, जिनका प्रभाव बिहार पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। विशेष रूप से महिला शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयास किए गए ताकि महिलाओं को भी समान शैक्षिक अवसर प्राप्त हो सकें। [1] स्वतंत्रता से पूर्व बिहार में महिला शिक्षा अत्यंत सीमित थी। सामाजिक कुरीतियाँ, रूढ़िवादी सोच, आर्थिक अभाव और बाल विवाह जैसी प्रथाएँ महिलाओं की शिक्षा में बड़ी बाधा थीं। लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात समाज सुधारकों, नीतिनिर्माताओं और सरकार ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। [2] 1950 के बाद बिहार में विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की गई तथा लड़कियों के लिए विशेष शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई। शिक्षा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन पर विशेष ध्यान दिया गया। साथ ही, शिक्षा नीतियों में महिला शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए निशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति, मध्यान्ह भोजन योजना और साइकिल योजना जैसी पहलें लागू की गईं, जिनसे बालिकाओं का स्कूल में प्रवेश और निरंतरता बढ़ी। [3]

महिला शिक्षा ने बिहार के सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिवर्तन की नींव रखी। शिक्षित महिलाएँ न केवल रोजगार के अवसरों तक पहुँचीं बल्कि परिवार और समाज में भी उनकी स्थिति मजबूत हुई। आजादी के बाद प्रारंभ हुए ये प्रयास धीरे.धीरे महिला सशक्तिकरण और समानता की दिशा में बिहार की प्रगति का आधार बने। [4]

आजादी से पूर्व बिहार में महिला शिक्षा की स्थिति

भारत में महिला शिक्षा का इतिहास सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा रहा है। बिहार भी इस संदर्भ में अपवाद नहीं था। आज़ादी से पूर्व बिहार में महिला शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय एवं पिछड़ी हुई थी। समाज में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया। [5]

प्राचीन काल में नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में शिक्षा का उच्च स्तर था, किंतु यह अवसर महिलाओं को शायद ही उपलब्ध था। वैदिक युग में कुछ विदुषियों का उल्लेख मिलता है, लेकिन मध्यकालीन बिहार में सामाजिक कुरीतियों और पर्दा.प्रथा ने महिलाओं की शिक्षा को लगभग असंभव बना दिया। परिणामस्वरूप महिला शिक्षा केवल अभिजात वर्ग या कुछ प्रगतिशील परिवारों तक ही सीमित रह गई। [6]

औपनिवेशिक काल में बिहार में शिक्षा सुधार की चर्चा हुई, किंतु इसका लाभ स्त्रियों को नगण्य ही मिला। ब्रिटिश सरकार ने आधुनिक शिक्षा संस्थानों की स्थापना तो की, परंतु उनका उद्देश्य मुख्यतः प्रशासनिक वर्ग तैयार करना था। ग्रामीण और निम्नवर्गीय परिवारों में यह धारणा गहरी थी कि लड़कियों की शिक्षा व्यर्थ है और विवाह के बाद उसका कोई उपयोग नहीं होगा। फलस्वरूप, अधिकतर परिवार अपनी बेटियों को विद्यालय भेजने से हिचकिचाते थे। [7]

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कुछ समाज सुधारकों ने महिला शिक्षा की दिशा में प्रयास प्रारंभ किए। भारतेंदु हरिश्चंद्र, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद जैसे सुधारकों के विचारों ने बिहार में भी प्रेरणा दी। साथ ही, जयप्रकाश नारायण, अयोध्या प्रसाद खत्री, और अन्य प्रगतिशील चिंतकों ने महिला शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। इसी काल में पटना, भागलपुर और मुजफ्फरपुर जैसे शहरों में लड़कियों के लिए कुछ विद्यालय खुले। मिशनरी स्कूलों ने भी महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया।

फिर भी, यह आंदोलन सीमित दायरे तक ही रहा। ग्रामीण क्षेत्रों में निरक्षरता की दर बहुत अधिक थी। महिला शिक्षा को लेकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों. जैसे शिक्षा से लड़कियां षबिगड़' जाएंगी या विवाह योग्य नहीं रहेंगी. ने स्थिति को और भी जटिल बना दिया। आर्थिक पिछड़ापन भी एक बड़ी बाधा था, क्योंकि गरीब परिवार लड़कियों की शिक्षा पर खर्च करने में सक्षम नहीं थे। [8]

आजादी के बाद महिला शिक्षा का प्रारंभिक दौर (1947-1960)

भारत की स्वतंत्रता के साथ ही बिहार में महिला शिक्षा के विकास की नई संभावनाएँ खुलीं। आजादी से पहले तक महिलाओं की शिक्षा उपेक्षित थी और सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक पिछड़ेपन तथा पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण बालिकाओं के लिए शिक्षा का मार्ग कठिन था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा नीति में महिलाओं को विशेष महत्व दिया गया और बिहार राज्य ने भी इस दिशा में ठोस प्रयास किए। [9]

1947 से 1960 का समय बिहार में महिला शिक्षा के लिए आधारशिला रखने वाला दौर था। इस कालखंड में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नए विद्यालय स्थापित किए गए। सरकार ने शिक्षा को सार्वभौमिक और सुलभ बनाने का लक्ष्य रखा तथा मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा के प्रति आकर्षित करने हेतु प्रोत्साहन योजनाएँ प्रारंभ की गईं।

इस दौर में महिला शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में भी धीरे.धीरे परिवर्तन आया। जहाँ पहले लड़कियों को केवल घरेलू कार्यों तक सीमित समझा जाता था, वहीं स्वतंत्रता के बाद शिक्षित महिलाओं की आवश्यकता को समाज ने महसूस करना शुरू किया। नर्सिंग, अध्यापन और प्रशासनिक सेवाओं में महिलाओं के प्रवेश की संभावनाओं ने भी शिक्षा की ओर रुझान को मजबूत किया। [10]

1950 के बाद भारत सरकार की प्रथम शिक्षा आयोग की सिफारिशों के तहत महिला शिक्षा के विस्तार पर विशेष बल दिया गया। बिहार में पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर जैसे नगरों में महिला विद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या बढ़ने लगी। विश्वविद्यालय स्तर पर भी महिला छात्राओं का नामांकन धीरे.धीरे बढ़ा। 1951 की जनगणना के अनुसार बिहार में महिला साक्षरता दर मात्र 4.2% थी, लेकिन 1961 तक यह बढ़कर 8.1% हो गई। यह वृद्धि भले ही धीमी थी, परंतु यह स्पष्ट करती है कि शिक्षा का प्रसार महिलाओं तक पहुँचने लगा था।

इस अवधि में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में सामाजिक सुधारकों, महिला संगठनों और शिक्षाविदों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं ने गाँव.गाँव जाकर महिलाओं को शिक्षा के महत्व से अवगत कराया और अभिभावकों को बालिकाओं को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया। [11]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आजादी के बाद का पहला दशक बिहार में महिला शिक्षा की नींव रखने का काल था। यद्यपि इस दौर में चुनौतियाँ अनेक थीं. जैसे गरीबी, रूढ़िवादी परंपराएँ और संसाधनों की कमी.फिर भी राज्य ने महिला शिक्षा को प्राथमिकता दी। परिणामस्वरूप, 1947.1960 के बीच बिहार में महिला शिक्षा की दिशा और दशा में सकारात्मक परिवर्तन आरंभ हुआ, जिसने आगे के दशकों में प्रगति की मजबूत आधारशिला तैयार की। [12]

1970.1990 के दशक में विकास

1970.1990 का दौर महिला शिक्षा के संदर्भ में बिहार के लिए संक्रमण काल साबित हुआ। इस समय सामाजिक सुधार आंदोलनों, सरकारी नीतियों और योजनाओं ने महिला शिक्षा की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन लाने का प्रयास किया।

1970 के दशक में बिहार में महिला साक्षरता दर बहुत कम थी। ग्रामीण इलाकों में तो महिलाएँ शिक्षा से लगभग वंचित थीं। बाल विवाह, पर्दा प्रथाए गरीबी और सामंती मानसिकता महिला शिक्षा के मार्ग में बड़ी बाधाएँ थीं। इस समय केंद्र और राज्य सरकार ने "राष्ट्रीय साक्षरता मिशन", "सर्व शिक्षा अभियान" और छात्रवृत्ति योजनाओं की नींव रखी। यद्यपि इनका वास्तविक प्रभाव धीरे.धीरे दिखा, परंतु इससे शिक्षा के प्रति जागरूकता का वातावरण तैयार हुआ।

1980 के दशक में बिहार में महिला शिक्षा के विकास को गति मिली। इस समय तक प्राथमिक और मध्य विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन दर बढ़ने लगी। सरकार ने "मध्याह्न भोजन योजना" और "छात्रवृत्ति" जैसे प्रोत्साहन कार्यक्रमों को लागू किया, जिससे गरीब परिवारों ने भी लड़कियों को विद्यालय भेजना प्रारंभ किया। 1986 की नई शिक्षा नीति (National Policy on Education) ने शिक्षा में लैंगिक समानता पर जोर दिया और महिलाओं के लिए साक्षरता कार्यक्रमों को व्यापक रूप से लागू किया। इसी काल में कुछ स्वयंसेवी संगठनों और महिला आंदोलनों ने भी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को फैलाया। [13]

1990 के दशक में बिहार की महिला शिक्षा में ठोस सुधार दिखने लगे। इस अवधि में उच्च शिक्षा संस्थानों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। लड़कियों के लिए पृथक विद्यालयों और छात्रावासों की स्थापना, महिला शिक्षिकाओं की नियुक्ति और सामाजिक संगठनों के सहयोग ने शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया। इस काल में महिला साक्षरता दर धीरे.धीरे बढ़कर राष्ट्रीय औसत की ओर बढ़ी। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच का अंतर अभी भी मौजूद था, किंतु यह स्पष्ट हो गया कि समाज में शिक्षा को लेकर दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।

कुल मिलाकर, 1970.1990 का दौर बिहार में महिला शिक्षा के इतिहास में एक निर्णायक चरण था। इस काल में जहाँ प्रारंभिक स्तर पर अनेक चुनौतियाँ थीं, वहीं सरकारी योजनाओं, सामाजिक जागरूकता और महिला आंदोलनों ने शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर खोले। परिणामस्वरूप, आने वाले दशकों में महिला शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रगति हुई, उसकी नींव इसी कालखंड में पड़ी। [14]

1990 के बाद से महिला शिक्षा की दिशा

1990 के बाद से बिहार में महिला शिक्षा की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल में सामाजिक.आर्थिक सुधारों, शिक्षा नीतियों और सरकारी योजनाओं ने महिला शिक्षा को नई गति प्रदान की। सर्वप्रथम 1990 के दशक में शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित करने और सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत ने लड़कियों की नामांकन दर को बढ़ाया। बिहार सरकार ने मुख्य मंत्री बालिका प्रोत्साहन योजना तथा साइकिल योजना जैसी पहलें कीं, जिनसे ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों को विद्यालय तक पहुंचना सरल हुआ।

इसके अतिरिक्त, 2000 के बाद उच्च शिक्षा में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। शिक्षक प्रशिक्षण, महिला कॉलेजों की स्थापना तथा छात्रवृत्तियों के विस्तार ने उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया। सामाजिक चेतना, गैर.सरकारी संगठनों की सक्रियता और महिला सशक्तिकरण आंदोलनों ने भी शिक्षा को बढ़ावा दिया।

हालाँकि, आज भी ग्रामीण.शहरी अंतर, बाल विवाह, गरीबी और पारंपरिक सोच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। फिर भी 1990 के बाद से महिला शिक्षा का परिदृश्य सकारात्मक रहा है, जिससे न केवल महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हुई बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में उनकी भागीदारी भी सशक्त हुई। [15]

समकालीन परिदृश्य (2000 के बाद)

2000 के बाद बिहार में महिला शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रारंभिक दशकों में जहाँ महिला शिक्षा सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक अभाव और अवसंरचनात्मक कमी से बाधित थी, वहीं 21वीं सदी में स्थिति धीरे.धीरे बदली। राज्य सरकार द्वारा श्मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना, श्पोषाक योजना" और श्बालिका प्रोत्साहन योजना" जैसे कार्यक्रमों ने लड़कियों की विद्यालयों में उपस्थिति को बढ़ावा दिया। प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक नामांकन दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और ड्रॉपआउट दर में कमी आई।

साक्षरता दर में भी खास सुधार हुआय 2001 में महिला साक्षरता जहाँ मात्र 33ः थी, वहीं 2011 तक यह बढ़कर लगभग 53ः हो गई और आगे के वर्षों में निरंतर वृद्धि हुई। ग्रामीण क्षेत्रों में भी लड़कियों के लिए विद्यालयों की पहुँच आसान होने से शिक्षा का दायरा बढ़ा। उच्च शिक्षा संस्थानों में महिला भागीदारी बढ़ने लगी, जिससे व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी उपस्थिति मजबूत हुई। [16]

फिर भी, गुणवत्ताए लैंगिक असमानता और सामाजिक रूढ़ियों की चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसके बावजूद, 2000 के बाद का परिदृश्य यह दर्शाता है कि बिहार में महिला शिक्षा अब केवल साक्षरता तक सीमित न होकर आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर है।

तालिका 1: बिहार महिला साक्षरता दर (1951-2011)

वर्ष (Year)	महिला साक्षरता दर (%)
1951	4.22
1961	8.11
1971	9.86
1981	16.61
1991	21.99
2001	33.57
2011	51.50

स्रोत-Census of India 1951, 1961, 1971, 1981, 1991, 2001 & 2011

चुनौतियाँ और बाधाएँ

भारत की स्वतंत्रता के बाद बिहार में महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाएँ और नीतियाँ लागू की गईं। प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक लड़कियों के नामांकन में वृद्धि हुई, छात्रवृत्तियाँ, साइकिल योजना, वर्दी योजना तथा आरक्षण नीतियों ने सकारात्मक भूमिका निभाई। इसके बावजूद बिहार में महिला शिक्षा का विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सका। [17]

महिला शिक्षा के सामने सबसे बड़ी चुनौतियाँ सामाजिक कुरीतियाँ, बाल विवाह, दहेज प्रथा तथा पितृसत्तात्मक मानसिकता रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अभिभावकों का झुकाव अब भी लड़कियों को घरेलू कार्य तक सीमित रखने की ओर अधिक है। आर्थिक पिछड़ापन, शैक्षणिक ढाँचे की कमी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों का अभाव और विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं की न्यूनता भी महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं। सुरक्षा की चिंता और दूरस्थ विद्यालयों तक पहुँच की कठिनाइयाँ लड़कियों की शिक्षा में और रुकावट डालती हैं। [18]

हालाँकि हाल के वर्षों में सरकार और गैर.सरकारी संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों से महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। फिर भी सामाजिक जागरूकता, लैंगिक समानता, शिक्षा की गुणवत्ता और रोजगारोन्मुख अवसरों की ओर ध्यान देना आवश्यक है, ताकि बिहार में महिला शिक्षा वास्तविक सशक्तिकरण का साधन बन सके।

महिला शिक्षा के विकास में सकारात्मक परिवर्तन

बिहार में महिला शिक्षा का इतिहास कई उतार.चढ़ावों से गुज़रा है। लंबे समय तक सामाजिक कुरीतियाँ, गरीबी, रूढ़िवादी दृष्टिकोण और संसाधनों की कमी के कारण महिलाएँ शिक्षा से वंचित रहीं। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विशेषकर पिछले कुछ दशकों में महिला शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। [19]

सबसे पहले, राज्य सरकार ने ष्सर्व शिक्षा अभियान, ष्कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, 'साइकिल योजना, तथा ष्मुख्यमंत्री बालिका प्रोत्साहन योजना' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से लड़कियों को शिक्षा से जोड़ने का कार्य किया। इन योजनाओं ने न केवल बालिकाओं के विद्यालय में नामांकन दर को बढ़ाया बल्कि उनके नियमित उपस्थिति और अध्ययन की निरंतरता को भी सुनिश्चित किया। [20]

दूसरे, सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। पहले जहाँ बालिकाओं को घर.परिवार तक सीमित माना जाता था, वहीं अब अभिभावक उनकी

शिक्षा को जीवन.संस्कार और आत्मनिर्भरता का साधन समझने लगे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब बालिकाएँ उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही हैं।

तीसरे, उच्च शिक्षा संस्थानों और व्यावसायिक शिक्षा में महिला भागीदारी बढ़ी है। चिकित्सा, अभियंत्रण, प्रशासन और शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में बिहार की महिलाएँ अग्रणी स्थान प्राप्त कर रही हैं।

इन सबके परिणामस्वरूप महिला साक्षरता दर में निरंतर वृद्धि हुई है। महिला शिक्षा ने सामाजिक चेतना, आर्थिक आत्मनिर्भरता और लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया है। अतः कहा जा सकता है कि बिहार में महिला शिक्षा के विकास ने सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की मजबूत नींव रखी है। [21]

निष्कर्ष

यह अध्ययन बिहार में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं की शिक्षा में प्रगति पर प्रकाश डालता है, लेकिन सामाजिक.आर्थिक बाधाओं, सांस्कृतिक मानदंडों और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के कारण लगातार चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कम उम्र में विवाह, घरेलू ज़िम्मेदारियाँ और महिला नेतृत्व की कमी अवसरों को सीमित करती है, और ग्रामीण एवं वंचित समूहों को सबसे बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। हालाँकि सरकारी पहलें मौजूद हैं, लेकिन उनका क्रियान्वयन अक्सर अप्रभावी होता है, खासकर दूरदराज के इलाकों में। जागरूकता अभियान, बेहतर बुनियादी ढाँचाए लक्षित नीतियाँ और सामुदायिक भागीदारी सहित एक समग्र दृष्टिकोण की ज़रूरत है। अंतिम लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना, महिलाओं को सामाजिक.आर्थिक विकास में योगदान देने और गरीबी एवं हाशिए के चक्र को तोड़ने के लिए सशक्त बनाना है।

सन्दर्भ - सूची

1. Sister Sanjana AC, Agrawal P, Sharma M, Jyoti. Advancing women's education in Bihar since independence: challenges and progress. QUEST - A Peer Reviewed Research Journal (Patna Women's College). 2025;3:68-77.
2. Kumar A, Singh BK. Analysis of the status of women's education in Bihar in the light of economic development. Int J Trend Sci Res Dev (IJTSRD). 2024;8(4):560-1.
3. Drèze J, Sen A. An uncertain glory: India and its contradictions. Princeton (NJ): Princeton University Press; 2013. p. 434-48.
4. Advance Agricultural Practice. Farming in Bihar. Available from: www.advanceagriculturalpractice.in/w/index.php/Farming_in_Bihar.en.wikipedia.org/wiki/Bihari_culture
5. सिंह गंगाशरण. बिहार एक सांस्कृतिक वैभव. पटना: पारिजात प्रकाशन; 1986. पृ.सं. 28.
6. उर्मिलेश. बिहार का सच. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान; 1991. पृ.सं. 51.
7. Brand Bihar. Sitamarhi RIGA Districts. Available from: www.brandbihar.com/.../districts%5Csitamarhi%5CSitamarhi_RIGA
8. वर्मा आरपी. पीपल्स पार्टीसीपेशन इन इण्डियन पॉलीटिक्स. दिल्ली: रजत पब्लिकेशन्स; 2002. पृ.सं. 151.
9. ढिल्लन एचएस. लीडरशिप एंड ग्रुप्स इन विलेज. दिल्ली: प्लानिंग कमीशन; 1955. पृ.सं. 12.
10. शक्तावत गायत्री. महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता व पंचायतीराज व्यवस्था: एक अवधारणात्मक विवेचना. निवाई: नवजीवन प्रकाशन; 2011. पृ.सं. 120.
11. Ballara M. Women and literacy. Atlantic Highlands (NJ): Zed Books; 1992.
12. Baruah B. Role of electronic media in empowering rural women education of N.E. India. ABHIBYAKTI: Annual Journal. 2013;1:23-6.
13. Chen M. Progress of the world's women 2005: women, work and poverty. New York (NY): UNIFEM; 2005. p. 75-83.
14. Goswami L. Education for women empowerment. ABHIBYAKTI: Annual Journal. 2013;1:17-18.
15. Kadam RN. Empowerment of women in India: an attempt to fill the gender gap. Int J Sci Res Publ. 2012;2(6):11-13.
16. King EM. Educating girls and women: investing in development. Washington (DC): The World Bank; 1990.
17. Lagemann EC. A generation of women: education in the lives of progressive reformers. Cambridge (MA): Harvard University Press; 1979.
18. Marshal A. Organizing across the divide: local feminist activism, everyday life and the election of women to public office. Soc Sci Q. 2002;83(3):707-725.
19. Nussbaum MC. Women and human development: the capabilities approach. New York (NY): Cambridge University Press; 2000.
20. Nagaraja B. Empowerment of women in India: a critical analysis. J Humanit Soc Sci (IOSR-JHSS). 2013;9(2):45-52. Available from: http://www.iosrjournals.org/empowerment.html
21. Vinze MD. Women empowerment in India: a socio-economic study of Delhi. New Delhi: Mittal Publications.